माध्यमिक शालाके कक्षा ९वीं के छात्रों में प्रार्थना सभा से प्राप्त होनेवाले मूल्यों का अध्ययन

अनिरुध्धसिंह वाय. राउलजी
सह–अध्यापक पी.के.ईनामदार कॉलेज ओफ अेज्युकेशन, बाकरोल

1.प्रस्तावना

"प्रार्थना आत्मा का खुराक है"। भारतीय परम्परा रही है कि किसी भी कार्य की शुभ शुरूआत प्रार्थना से होती है। अतः व्यक्तिगत एवं सामाजिक हित हेतु दोनों ही रूपों में हमारे समाज में प्रार्थना का प्रचलन वैदिक काल से ही है।

प्रार्थना शब्द प्र+अर्थ+ल्यूट् प्रत्यय से बना हुआ है। जिसका अर्थ होता है – बिंनती करना, निवेदन या स्मृति करना। प्राचीन काल से ही प्रार्थपना का महत्व हमारे देश में प्रभावी रहा है। ".....दिन का काम प्रार्थना से शुरू कीजिए और उसमें इतनी आत्मा उड़ेलिए कि वह शाम तक आपको साथ बनी रहे। दिन का अन्त भी प्रार्थना के साथ कीजिए। ताकि आपकी रात शांतिपूर्वक तथा स्वप्नों तथा दुःस्वप्नो से मुक्त रहें। प्रार्थना के स्वरूप की चिंता न की जिए। स्वरूप कुछ भी हो, वह ऐसा होना चाहिए, जिससे भगवान के साथ हमारे मन का लौ लग जाए। इतना ध्यान रखिए की स्वरूप कैसा भी हो मगर आके मूंह से प्रर्थना का शब्द निकते समय आपका मन इधर–उधर नहीं भटकना चाहिए। " **(भाषाण साबरमती आश्रम की प्रार्थना सभा में)**

माध्यमिक शिक्षा आयोग(1952–53) ने आपने प्रतिवेदन में सुझाव दिया है कि "प्रत्येक विद्यालय की दिनचर्या का आरंभ शिक्षकों व छात्रों की असेम्बली से होना चाहिए जाहाँ प्रतिदिन के कार्या का घोषणा होती हें।इस सभा का सद्प्रयोग प्रतिष्टित व्यक्तियों के प्रेरणास्पद वार्तालाप से किया जाना चाहिए।" **श्री**

प्रकाश समिति(1956) ने प्राथमिक स्तर पर इस की रूपरेखा स्पष्ट करते हुए कहा कि "प्रतिदिन की सभा में प्राथमिक विद्यालयों में समूह गान, सरस कहानियाँ, महापुरूषो की जीवनी दर्शाने वाली दृश्य–श्राव्य सामग्री आदि का प्रदर्शन किया जाना चाहिए।"

गांधीजी के शब्दों में कहे तो **"अगर भारत को अध्यात्म शून्य नहीं बनना हे तो यहाँ के युवको को धार्मिक शिक्षण उतना ही आवश्यक है जितना धर्म निरपेक्ष शिक्षण।"**

2. समस्या कथन

माध्यमिक शालाके कक्षा ९वीं के छात्रों में प्रार्थना सभा से प्राप्त होनेवाले मूल्यों का अध्ययन

3.अध्ययन उद्देश्य

- प्रार्थना सभासे कक्षा ९वीं के विद्यार्थीओं को प्राप्त होनेवाले मूल्यों का अध्ययन करना।

- प्रार्थना सभासे कक्षा ९वीं के छात्रों(लड़को) को प्राप्त होनेवाले मूल्यों का अध्ययन करना।
- प्रार्थना सभासे कक्षा ९वीं के छात्राओं(लड़कीयों) को प्राप्त होनेवाले मूल्यों का अध्ययन करना।

4.शोध प्रश्न

- क्या कक्षा ९वीं के छात्रों(लड़के) को प्रार्थना सभासे मूल्यों की प्राप्ती होती है ?
- क्या कक्षा ९वीं के छात्राओं(लड़कीयों) को प्रार्थना सभासे मूल्यों की प्राप्ती होती है ?
- क्या कक्षा ९वीं के के छात्रों(लड़के) एवं छात्राओं(लड़कीयों) को प्रार्थना सभासे प्राप्त होनेवाले मूल्योंमें सार्थक अन्तर है ?

5.शोध अध्ययन का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कि सीमांए निम्नलिखित है

1. प्रस्तुत शोध माध्यमिक शाला की कक्षा ९वीं तक सीमीत है।
2. प्रस्तुत शोध माध्यमिक शाला के कक्षा ९वीं के 50 छात्रों तक सीमीत है।

6.न्यादर्श का चयन

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु प्रतिदर्श का चयन गुजरात राज्य के पचंमहाल जिले के रतनपुर(काटड़ी) गावँ मे स्थित शासकीय माध्यमिक शाला के कक्षा ९वीं के 50 छात्रों को चयनित किया गया है।

7.शोध में प्रयुक्त उपकरणः–

अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने स्व निर्मित अभिप्रायावली का निमार्ण किया।

तालिका

शाला का प्रकार		शाला का नाम	छात्रों की संख्या		
शासकीय		सरस्वती विद्यामंदिर	लडके	लडकियाँ	
			25	25	
कुल	1	1	25	25	50

8.प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोधकार्य के प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु t टेस्ट तथा मध्यक की सहायता से प्राप्त डाटा का विश्लेषण किया गया। वह निम्नानुसार हैः

छात्र	सख्यां	मध्यक	प्रमाण विचलन	t टेस्ट
लडके	25	50	5.38	
लडकियाँ	25	53.8	4.66	2.71

9.निष्कर्ष

उपरोक्त परिकल्पना को ध्यान में रखते हुए यह निष्कर्ष निकलता है की तालिकाक्रमाकं 3 में शासकीय शाला एवं अशासकीय शाला के छात्राओ का मध्यक 50.2–48.93प्राप्त हुआ एवं प्रमाण विचलन 3.93–4. 12 प्राप्त हुआ तथा टी मूल्य 0.47 प्राप्त हुआ जो0.01 एवं 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है अर्थात

उपरोक्त परिकल्पना का अस्वीकार कियाजाता है। अतः यह कहा जा सकता है कि शासकिय एवं अशासकिय माध्यमिक शाला के कक्षा ९वीं के छात्राऔ में प्रर्थना सभा से प्राप्त होनेवाले मूल्य में अंतर है।

10. शोध निष्कष

इस शोध का मुख्य हेतु यह था की प्रार्थना सभा से बालको को मूल्यों की प्राप्ती होते है की नहीं यह जानना था 'शोध से यह मालुम हुआ की बालको को संस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रिय मूल्यों की प्राप्ती होती है जो उनको अभ्यास में सहायता प्राप्त होती है। अतः सभी शाला में प्रार्थना सभा होनी चाहिए। यह 'शोधा प्रपत्र भावि शोधार्थीयों के लिए पथदर्शक साबित हो शकेगा यही मेरा उद्देश्य है।

11. भावि शोध हेतु सुझाव

- यह शोधकार्य प्राथमिक शाला में भी किया जा सकता है
- यह शोधकार्य उच्च माध्यमिक शाला के बच्चों पर भी किया जा सकता है
- यह शोधकार्य बड़े न्यायदर्श का चयन करके एम.फिल एवं पी.एचडी स्तर पर भी किया जा
- सकता है।

संदर्भग्रंथ

1. कपिल, एच. के. अनुसन्धान विधियाँ, एच.पी.भार्गव बुक हाउस
2. त्रिपाठी, मधूसूदन शिक्षा अनुसन्धान एवं सांख्यिकी, ओमेगा पब्लिकेशन्स
3. शर्मा, आर. डी. रिसर्च मैथोडोलोजी, सुमित एंटरप्रइजेज
4. શાહ, દીપિકા ભટ્ટેશ શૈક્ષણિક સંશોધન પ્રમુખ પ્રકાશન
5. મિસ્ત્રી, વસંત નવભારત સાહિત્ય મંદિર